

भारत में किसान आन्दोलन (Peasant Movements in India)

1. प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। यहाँ की सामाजिक-आर्थिक संरचना का आधार भूमि और खेती रही है। परंतु औपनिवेशिक शासन तथा सामंती व्यवस्था ने किसानों का भारी शोषण किया। इसके विरुद्ध समय-समय पर किसानों ने संगठित होकर प्रतिरोध किया, जिसे **किसान आन्दोलन** कहा जाता है।

2. किसान आन्दोलनों के कारण

1. **जमींदारी और लगान प्रथा** – अत्यधिक कर और लगान की वसूली।
 2. **औपनिवेशिक नीतियाँ** – नकदी फसलों की मजबूरी, अकाल और भूखमरी।
 3. **भूमिहीनता** – किसानों की जमीन पर जमींदारों और साहूकारों का नियंत्रण।
 4. **कर्ज और शोषण** – साहूकारों के अत्याचार और कर्ज के जाल।
 5. **सामाजिक असमानता** – जातिगत दमन और हाशिये पर धकेले गए समुदायों का शोषण।
-

3. प्रमुख किसान आन्दोलन (कालानुक्रमिक)

(क) औपनिवेशिक काल के आन्दोलन

- **नील आन्दोलन (1859–60, बंगाल)**
 - अंग्रेजों द्वारा जबरन नील की खेती थोपना।
 - किसानों ने इसकी खेती करने से इंकार कर दिया।
 - परिणाम: ब्रिटिश सरकार को नील की खेती पर नियंत्रण ढीला करना पड़ा।
- **पेबन्धी विद्रोह / पाबना आन्दोलन (1873–76, बंगाल)**
 - किसानों ने जमींदारों के अवैध कर वसूलने के खिलाफ संघर्ष किया।
 - यह आन्दोलन संगठित रूप और विधिक लड़ाई का उदाहरण था।
- **Deccan Riots (1875, महाराष्ट्र)**

- साहूकारों द्वारा बेइंसाफी और अत्यधिक कर्ज वसूली के विरुद्ध।
 - किसानों ने सामूहिक रूप से कर्ज की रसीदें जलायीं।
 - **चंपारण सत्याग्रह (1917, बिहार)**
 - गाँधीजी के नेतृत्व में नील की जबरन खेती और शोषण के विरुद्ध।
 - यह गाँधीजी का भारत में पहला सफल सत्याग्रह था।
 - **खेड़ा आन्दोलन (1918, गुजरात)**
 - असहनीय कराधान और अकाल की स्थिति में कर माफी की माँग।
 - गाँधीजी और सरदार पटेल का नेतृत्व।
 - **बारदोली सत्याग्रह (1928, गुजरात)**
 - वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में कर वृद्धि का विरोध।
 - सफलता के बाद पटेल को "सरदार" की उपाधि मिली।
-

(ख) स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े किसान आन्दोलन

- **तेभागा आन्दोलन (1946-47, बंगाल)**
 - बंटाईदार किसानों की माँग कि पैदावार का दो-तिहाई हिस्सा उन्हें मिले।
 - इसे वामपंथी दलों का समर्थन मिला।
 - **तेलंगाना किसान आन्दोलन (1946-51, आंध्र प्रदेश)**
 - निजाम और जमींदारों के खिलाफ किसानों का सशस्त्र संघर्ष।
 - भूमिहीन और दलित किसानों की बड़ी भागीदारी।
-

(ग) स्वतंत्रता के बाद के आन्दोलन

- **नक्सलबाड़ी आन्दोलन (1967, पश्चिम बंगाल)**
 - भूमिहीन किसानों और आदिवासियों का जमींदारों के खिलाफ सशस्त्र आन्दोलन।

- वामपंथी राजनीति और उग्रवाद की दिशा।
 - **किसान सभा आन्दोलन**
 - अखिल भारतीय किसान सभा (AIKS) ने किसानों के अधिकारों और भूमि सुधार की माँग उठाई।
 - **चिपको आन्दोलन (1973, उत्तराखंड)**
 - वनों की रक्षा के लिए किसानों और ग्रामीणों का आन्दोलन।
 - **भारतीय किसान यूनियन (BKD/BKU, 1980 के दशक)**
 - चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में गन्ना मूल्य, बिजली दर और कृषि नीति के खिलाफ आन्दोलन।
 - **हालिया किसान आन्दोलन (2020-21)**
 - तीन कृषि कानूनों के विरोध में किसानों का ऐतिहासिक आन्दोलन, जिसके परिणामस्वरूप सरकार को कानून वापस लेने पड़े।
-

4. किसान आन्दोलनों की विशेषताएँ

1. शोषण और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध।
 2. सामूहिक भागीदारी – किसानों, मजदूरों और वंचित वर्ग की।
 3. नेतृत्व की भूमिका – गाँधी, पटेल, अंबेडकर, वामपंथी नेता, किसान यूनियन।
 4. अहिंसक व हिंसक दोनों रूप – सत्याग्रह से लेकर सशस्त्र संघर्ष तक।
 5. उद्देश्य – आर्थिक न्याय, सामाजिक समानता और भूमि सुधार।
-

5. समाजशास्त्रियों का दृष्टिकोण

- **ए.आर. देसाई (A.R. Desai)** – किसान आन्दोलनों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अंग मानते हैं।

- **गैल ओमवेड्ट (Gail Omvedt)** – दलित और किसान आन्दोलन को आपस में जुड़ा हुआ सामाजिक न्याय का संघर्ष मानती हैं।
 - **एरिक हॉब्सबॉम (Eric Hobsbawm)** – किसान विद्रोहों को “*Primitive Rebels*” की संज्ञा देते हैं, लेकिन इन्हें आधुनिक आंदोलनों की नींव मानते हैं।
 - **रणजीत गुहा** – *Subaltern Studies* में किसानों के आन्दोलन को “इतिहास की गुमनाम आवाज़” के रूप में देखते हैं।
-

6. निष्कर्ष

भारत में किसान आन्दोलन केवल आर्थिक संघर्ष नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और राजनीतिक चेतना का प्रतीक हैं। ये आन्दोलन भारतीय समाज को लोकतांत्रिक, समानतामूलक और न्यायपूर्ण बनाने में मील का पत्थर साबित हुए हैं।